शेखर : एक जीवनी

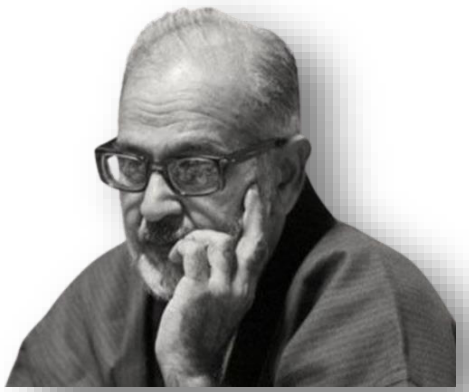

(1941-44)

वर्ण्य विषय – तीन वर्षीय शेखर के शिशु मन के अहं, भय, सेक्स भाव का चित्रण।

विधा – मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास

शैली – पूर्वदीप्ति, दृश्यात्मक, परिदृश्यात्मक, प्रत्यग्दर्शन शैली।

भाग – दो भाग (उत्थान एवं उत्कर्ष)

प्रथम भाग प्रकाशन – 1941 ई0

द्वितीय भाग प्रकाशन – 1944 ई0

पहले खंड के चार भागों के शीर्षक हैं:

1. **उषा और ईश्वर (भोर और भगवान),**
2. **बीज और अंकुर (बीज और अंकुर),**
3. **प्रकृति और पुरुष (प्रकृति और पुरुष)**
4. **पुरुष और परिस्थिति (मनुष्य और परिस्थिति)।**

दूसरे खंड के भागों में

1. **पुरुष और परिस्थिति (मनुष्य और परिस्थिति),**
2. **बंधन और जिज्ञासा (कारावास और जिज्ञासा)**

3. शशि और शेखर (शशि और शेखर)
4. धागे, रस्सियां, गुंझार (धागे, रस्सियाँ, गांठें)

उपन्यास नाटकीय रूप से शुरू होता है, पहला शब्द फाँसी है जो निष्पादन के लिए हिंदी शब्द है। इसी नाम के उपन्यास का नायक शेखर अपने जीवन के बारे में सोचता है क्योंकि वह अपनी फांसी का इंतजार कर रहा है। एक सामाजिक यथार्थवादी कथा लिखने के बजाय , लेखक ज्वलंत फ्लैशबैक का उपयोग करते हुए चेतना तकनीक की एक धारा का उपयोग करता है, जो शेखर के दिमाग में वास्तविकता का अनुभव करने के तरीके को विशेषाधिकार देता है, क्योंकि वह अपने विचारों को पीछे छोड़ देता है, अपनी मृत्यु की पूर्व संध्या पर। ब्रिटिश अधिकारियों ने उनकी कल्पना में उनके जीवन के प्रमुख प्रसंगों को फिर से दर्शाया।

हमें पता चलता है कि उनका जन्म पटना में हुआ था, वह एक पुरातत्वविद् के बेटे थे, और उन्होंने अपने शुरूआती जीवन का कुछ हिस्सा कश्मीर में बिताया , जहां उनका सामना एक पश्चिमी लड़की, मिस प्रतिभा लाल से हुआ और उन्हें प्रारंभिक निराशा हुई। अपनी शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों के दौरान वह एक विद्रोही स्वभाव प्रदर्शित करता है। जब परिवार दक्षिण में नीलगिरि पहाड़ियों में ऊटाकामुंड में वापस चला जाता है , तो उसे शारदा से प्यार हो जाता है, जिसके परिवार ने अचानक दूर जाकर उनका रिश्ता तोड़ दिया। फिर उसकी दोस्ती एक लड़की शांति से होती है, जो तपेदिक से पीड़ित है। उसकी मृत्यु के बाद उसके परिवार ने उसे मद्रास भेज दिया , जहाँ वह एक ब्राह्मण छात्रावास में रहता है। वह ब्राह्मण से घृणा करता है , जाति के प्रति जुनूनी है , खासकर तब जब उसका एकमात्र परिचित, कुमार, उससे पैसे पाने के लिए उनकी दोस्ती का फायदा उठाता है। वह मलिन बस्तियों में बच्चों के लिए एक स्कूल स्थापित करने की कोशिश करता है, एक बहस

करने वाला समाज बनाता है, और पूरे दक्षिण की यात्रा करता है, लगभग महाबलीपुरम में डूब जाता है ।
दूसरे खंड में, अपनी शिक्षा को पूरा करने के लिए वह लाहौर के एक कॉलेज में दाखिला लेता है, जहां वह जाति से नहीं, बल्कि पश्चिमी तरीकों की नकल करने वाले भारतीयों के भ्रष्ट आचरण से भयभीत होता है, खासकर ऑक्सफोर्ड में प्रशिक्षित महिला शिक्षक मनिका के चरित्र से। वहां उसने शशि नाम की एक लड़की से दोबारा संपर्क स्थापित किया, जिससे वह बचपन में मिला था। वह कांग्रेस पार्टी द्वारा आयोजित एक शिविर में एक स्वैच्छिक अधिकारी के रूप में भर्ती हुए । मुखबिरों द्वारा शिविर में सफलतापूर्वक घुसपैठ की गई और उसे झूठे आरोपों में गिरफ्तार कर लिया गया और दस महीने जेल की सजा काटनी पड़ी। वहां उसकी दोस्ती मदनसिंह, रामाजी और मोहसिन से होती

है, जो उसकी सोच पर गहरा प्रभाव डालते हैं। कैद के दौरान, उसे यह भी पता चला कि शशि, जो कभी-कभार मिलने आती है, की सगाई तयशुदा शादी में हो चुकी है।
एक बार जब वह अपनी स्वतंत्रता हासिल कर लेता है, तो वह बिना किसी सफलता के क्रांतिकारी पुस्तिकाएं लिखने के लिए खुद को समर्पित कर देता है। वह जहां भी जाता है, दोस्त केवल उसकी संगति को बढ़ाते हैं ताकि वह उनकी ब्राह्मण बेटियों में से एक से शादी कर सके। वह विवाहित शशि को बताता है कि वह आत्महत्या के लिए प्रलोभित है, और वह यह सुनिश्चित करने के लिए रात भर उसके साथ रहती है कि वह आत्महत्या न कर ले। इस बात का पता चलने पर उसका पति उसे बुरी तरह पीटता है और घर से निकाल देता है। वह शेखर के साथ रहने चली जाती है, हालाँकि यह रिश्ता कभी भी यौन संबंध में विकसित नहीं होता है। वे दिल्ली चले जाते हैं जहां वह अपने क्रांतिकारी हितों का पालन करते हैं। एक सेल उसे हथियार सौंपता है जिसका उपयोग वे एक साथी को जेल से बाहर

निकालने के लिए करना चाहते हैं। कुछ ही समय बाद, शशि अपने पूर्व पति द्वारा की गई पिटाई के प्रभाव से मर जाती है, और शेखर जेल में बंद हो जाता है।

महत्वपूर्ण बिंदु व कथन –

☞ शेखर एक जीवनी अधूरा ताजमहल है। गोदान, कामायनी और शेखर एक जीवनी एक शताब्दी की तीन महान् साहित्यिक कृतियाँ हैं। – विश्वम्भर मानव

☞ इस रचना को पढ़ने के उपरांत मन पर प्रधानतः दो प्रभाव पड़ते हैं पहला शेखर की मानसिक ताकत का और दूसरा गहरी करुणा का। यह रचना एक

जीवन का अध्ययन है। यह जीवन व्यक्ति का जीवन है, समाज या युग का जीवन नहीं। – डॉ. नगेन्द्र

☞ अज्ञेय यातना का दर्शन प्रचारित करनेवाले लेखक हैं।

– डॉ. नरोत्तम नागर

☞ अज्ञेय ही 'शेखर एक जीवनी' में बोलते प्रतीत होते हैं।.... समाज और युग की सामाजिक स्थिति और गंभीर समस्याओं का विश्लेषण इसमें अत्यन्त सूक्ष्म व गहन है। – डॉ. नगेन्द्र

☞ कामायनी यदि वर्तमान युग का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है तो शेखर: एक जीवनी सर्वश्रेष्ठ महाकाव्यात्मक उपन्यास। - डॉ. शांति स्वरूप गुप्त

☞ दो वटों के बीच बहनेवाली जीवन सरिता का यह पाठ चौड़ा भी है उसकी धारा विस्तीर्ण भी है. उसमें उठनेवाली लहरियाँ रंगनवमी और क्षुब्ध विकल भी, तटों के दृश्य मोहक, ऊबड़-खाबड़ और सुनसान भी।

- डॉ. शांति स्वरूप गुप्त

अज्ञेय के कथन-

☞ शेखर मेरी ओर से जीवन की आलोचना और जीवन का दर्शन है।

☞ शेखर घनीभूत वेदना की एक ही रात में देखे हुए विजन को शब्दबद्ध करने का प्रयास है।

☞ वेदना में एक शक्ति है जो दृष्टि देती है। जो यातना में है वह द्रष्टा हो सकता है।

☞ शेखर एक व्यक्ति का अभिन्नतम निजी दस्तावेज है। तथापि वह साथ ही साथ वह उस व्यक्ति के संघर्ष का प्रतिबिम्ब भी है।

☞ शेखर: एक जीवनी (सारांश/कथानक)

शेखर: एक जीवनी (पात्र परिचय)

शेखर – (नायक) शेखर का व्यक्तित्व **अहंता, भय और सेक्स** इन्हीं 3 धरातलों पर सृजित हुआ है। विद्रोहात्मकता उसके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है। वह घोर स्वाभिमानी, अंतिम सीमा तक ईमानदार, निर्भीक, जिज्ञासु है।

सरस्वती – उपन्यास की प्रमुख पात्रा। शेखर को नारी का प्रथम स्नेह सरस्वती से मिलता है और वह उसे बहिन से सरस्वती और सरस्वती से 'सरस महसूस करता है। शेखर के जीवन में सरस्वती के अतिरिक्त शशि, शीला, प्रतिभा, शांति इत्यादि नारी पात्र आती हैं।

प्रतिभा – शेखर की खेल की सखी जिसे शेखर प्यार करता है। समवयस्का बालिका के रूप में शेखर का दूसरा परिचय प्रतिभा से ही होता है।

शारदा – शारदा वह नारी पात्र है, जो शेखर की कामभावना का वास्तविक आलंबन बनती है। कैशोर्य प्रेम का इतना यथार्थ और मार्मिक चित्रण शारदा और शेखर के प्रेम में हुआ है, जो अन्यत्र दुर्लभ है।

शशि – उपन्यास की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्त्री-चरित्र, असाधारण चरित्र जो शेखर की जीवन शक्ति बनती है। शशि के आग्रह पर शेखर एम. ए. करता है, कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लेता है, जेल जाने को बाध्य होता है। शेखर

शशि से भावनात्मक रूप से जुड़ता है। शशि की शादी अन्यत्र हो जाती है शशि का पति उसे दुश्चरित्र घोषित कर जब घर से निकाल देना है तो शेखर उसका संरक्षक बनता है। अंत में शशि की मृत्यु हो जाती है।

मणिका – धनी, लेक्चरार (शेखर के कॉलेज की), शराबी, प्रखर प्रतिभा की धनी पर असंयत चरित्र ।

हरिदत्त – शेखर के पिता, अनुशासनप्रिय, शेखर पिता की प्रताड़ना का शिकार, पत्नी की मृत्यु के बाद अहं, दबदबापन खत्म और टूटन की कगार पर।

अन्य पात्र – बाबा मदन सिंह, मोहसिन और रामजी (बंदी पात्र), विद्याभूषण (शेखर का मित्र), हीथ, रामेश्वर, अमोलकराम, स्वामी हरिहरानंद, रामकृष्ण तथा कुमार (मद्रास में शेखर का कुमार से समलैंगिक प्रेम)।